:उपसंहार:

उपसंहार

संघर्ष ही जिनके जीवन का आरंभ रहा है ऐसे कमलेश्वर जी हिंदी साहित्य के एक महनीय साहित्यकार रहे हैं। हिंदी प्रेमी उन्हें `कमलेश्वर के नाम से जानते हैं। हाला की इन्होंने अन्य कई उपनामों से साहित्य सृजन किया हैं। अत्यंत छोटी उम्र से ही उन्हें संघर्ष करते रहना पड़ा था। साहित्य की कई विधाओं में वे साहित्यसृजन करते रहे फिर भी उन्हें अधिकतर कहानीकार के नाते ही जाना जाता है। सिर्फ साहित्य सृजन का काम ही उन्होंने नहीं किया तो दूरदर्शन, फिल्में आदि क्षेत्रों में भी इन्होंने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

कमलेश्वर के व्यक्तित्व और कृतित्व को मैंने सबसे पहले जाँचना चाहा। कमलेश्वर जी के बचपन , शिक्षा, परिवार आदि के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। फिर भी जब हम यह देखते हैं कि उनके साहित्य में मैंनपुरी का जिक्र बार-बार आया है तो उनके जीवन परिचय से ही यह ज्ञात होता है कि यह उनका जन्मस्थान है। आर्थिक विपन्नता के बावजूद भी उन्होंने एम.ए. तक की उच्चशिक्षा हासिल की। इसके लिए उन्होंने एक गोदाम में चौकीदारी से लेकर सम्पादक तक की नौकरीयाँ अत्यंत अल्प वेतन पर की। जब वे साहित्य सृजन करने लगे तब भी उन्होंने आकाशवाणी, दूरदर्शन पर काम किया। कमलेश्वर जी पहले कहानीकार के रूप में जाने जाते है। उपन्यासकार या फिल्म निर्माता बाद में। एक साहित्यकार के लिए जो-जो गुण आवश्यक होते है। वे सभी गुण उनमें पाये जाते है। फिल्मी परदें से भी वे अछूते न रहे वहाँ भी वे सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते चले गये। कमलेश्वर जी ने नयी कहानी को एक नया मोड़ दिया। अनेक पत्रिकाओं के सम्पादक के रूप में भी उन्होंने काम किया। साथ-साथ ही एक सही आलोचक के रूप में भी वे अपना योगदान देते रहे। कमलेश्वर जी का व्यक्ति विविधांगी है। परस्पर विरोधी विषयों पर पूरे प्रभुत्व के साथ वे बाते कर सकते है; चाहे राजनीति हो, चाहे संगीत हो, चाहे रसोई हो कोई भी बात हो। इस प्रकार उनके व्यक्तित्व के अलग-अलग पहलु दिखाई देते है जिससे पाठक प्रभावित होते है।

कमलेश्वर के उपन्यासों के कथानक को जब मैंने जाँचना चाहा तो वहाँ मैंने उनकी जन्मभूमि मैंनपुरी को बार-बार चित्रित पाया। कमलेश्वर जी के सारे उपन्यास लघु उपन्यास की कोटि में आते हैं। जिस

प्रकार उन्होंने स्वयं निरंतर संघर्ष किया था उसी प्रकार का संघर्ष उनके पात्र करते हैं। कमलेश्वरजी के उपन्यास `एक सड़क सत्तावन गलियाँ` के सभी पात्र भारत के किसी भी कस्बे के युवक और युवती के साथ घटित होनेवाली घटना को प्रस्तुत करते हैं। दूसरी ओर `डाक बंगला` की इरा जिसके जीवन में चार पुरुष आते हैं फिर भी वह पहले के इंतजार में भटकती रहती है। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए वह मानों खूद को बेच देती हैं। बँटवारे की भीषणता को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करनेवाला उपन्यास `लौटे हुए मुसाफिर` है। पति-पत्नी के बीच जब शक आ जाता है तो उनके सम्बन्ध कैसे बिखरते है यह दर्शानेवाला उपन्यास `तीसरा आदमी` है। कोई स्त्री जब घर से बाहर निकल आती है और राजनीति में चली जाती है तो उसकी क्या स्थिति हो जाती है, इस बात को दर्शानेवाला कमलेश्वर जी का उपन्यास `काली आँधी` राजनीतिक भ्रष्टाचार का भी यथार्थ चित्रण करता है। कमलेश्वरजी का `आगामी अतीत` उपन्यास वेश्या जीवन को उसकी समस्याओं का यथार्थ अंकन प्रस्तुत करता है। `वही बात` उपन्यास फिर एक बार एक ऐसा उपन्यास है जिसमें `तीसरा आदमी` की तरह की पति-पत्नी के बीच आनेवाले पुरुष की बात ही कही गयी है। फर्क सिर्फ इतना है कि यहाँ पत्नी दूसरे पुरुष के साथ रहने लगती है। और फिर उसी से उब जाती है। कमलेश्वरजी के `सुबह-दोपहर-शाम` उपन्यास में दो विचारधाराओं का संघर्ष दिखाने के लिए बड़ी दादी का सहारा लिया है। यह विचारधाराएँ पाश्चात्य और प्राचीन भारतीय संस्कृति हैं। यह उपन्यास स्वाधीनता से पहले के वातावरण को प्रस्तुत करता है। कमलेश्वरजी का `रेगिस्तान` उपन्यास प्राचीन आदर्श और उन आदर्शों के टुटने की कहानी कहता है। मध्यवर्गीय जीवन की कहानी कहनेवाला कमलेश्वरजी का `समुद्र में खोया हुआ आदमी` यह अंतीम उपन्यास है। बदलते नैतिक मूल्य, शहरी जीवन का बिखराव, टुटन आदि का विस्तृत विवेचन इस उपन्यास में आया है। अत: हम यह कह सकते है कि चाहे कमलेश्वरजी ने ढेरों उपन्यास लिखें फिर भी उन सभी का कथानक फिल्माने के लायक है, साहित्यिक दृष्टि से इसमें कई खामियाँ दिखाई देती है।

मेरा विषय है `कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाएँ, इसलिए मैंने सबसे पहले नायिका का स्वरूप क्या है, उसका विकास कैसे हुआ और उसके प्रकार कौनसे है इसके बारे में जानकारी हासिल करनी

चाही। मुझे यह ज्ञात हुआ कि नायिका का स्थान उपन्यास में भी महत्त्वपूर्ण हैं। प्राचीन और आधुनिक इन दो विभागों में जब नायिकाओं का विभाजन किया तो प्राचीन काल में नायिकाओं के प्रकृति के अनुसार अनेक रूप बताये गये हैं। जैसे - आचार्य भरत नायिकाओं के प्रकृति के अनुसार तीन प्रकार मानते हैं, अवस्था नुसार आठ तथा अन्य तीन भेद मानते हैं। कामसुत्र में नायिका के शारीरिक सौंदर्य सम्बन्धी बत्तीस लक्षण बताये हैं। प्रमुख रूप से स्वकीया, परकीया, सामान्या ये तीन ही भेद बताये जाते हैं। आधुनिक काल में नायिकाओं के स्वरूप एवं प्रकारों में अंतर आया। आधुनिक काल में नायिकाएँ इतने विविध प्रकार की है कि उन्हें प्रकारों में विभक्त करना आसान नहीं हैं। इसलिए हमने कहानी उपन्यास, नाटक आदि में स्वाधीनता से पहले नायिकाओं की कल्पना कैसी थी इसका विश्लेषण किया। फिर स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में नायिकाओं का स्वरूप कैसा था यह जब पता किया तो पता चला कि आधुनिक काल में साहित्यकारों की बाढ़ सी आ गयी तो महिला साहित्यकार और पुरुष साहित्यकार इस दृष्टि से साहित्य को विभाजित किया और फिर विविध विधाओं में नायिकाओं का रूप कैसा परिवर्तित होता गया इसका चित्रण किया गया है। यह पाया गया है कि स्वातंत्र्योत्तर काल में महिला साहित्यकारों के साहित्य में नायिकाओं के जिन रूपों का विश्लेषण किया गया है, वह अधिक आधुनिक विचारों वाली नायिकाएँ है। उनकी समस्याएँ आधुनिक नारी की समस्याएँ हैं। पुरुष साहित्यकारों ने भी नायिकाओं के स्वरुप में आधुनिकता लायी है।

जब कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं के विविध रूपों को देखने का प्रयास मैंने किया तो मैंने पाया कि सफल प्रेमिका, असफल प्रेमिका, अपारिवारिक नायिका, विधवा, कुण्ठित नायिका आदि नायिकाओं के रूप तो कमलेश्वर के उपन्यास में पाये जाते ही है परंतु आयु की दृष्टि से युवा अधेड़ और बुढ़ी नायिकाएँ आर्थिक स्थिति की दृष्टि से उच्चवर्ग, मध्यवर्ग, निम्नवर्ग की नायिकाएँ, नौकरीपेशा उर्फ कामकाजी और घरेलु साथ ही अंतर्मुखी, बहिर्मुखी, संस्कारशील, प्रगतिशील, आस्थावान, ,खण्डित व्यक्तित्ववाली, मोहभंग की स्थिति से गुजरनेवाली आत्माभिमानी आदि कई प्रकार की नायिकाएँ कमलेश्वर के उपन्यासों में पायी जाती है। निश्चय ही हम यह कह सकते हैं कि कमलेश्वर के उपन्यासों में नायिकाओं के उन विविध रूपों को अपनाया गया है जो

आजकल की आधुनिक नायिकाओं के मानदण्ड के रूप में माने जाते हैं।

कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं की विभिन्न समस्याओं का विश्लेषण इसके पश्चात किया गया है। समस्याओं को लेकर नायिकाओं का विश्लेषण किया गया है। नायिकाओं के जीवन में आनेवाली समस्याओं का विश्लेषण करने के पश्चात् यह पाया कि कमलेश्वरजी ने कुछ समस्याओं का बार-बार जिक्र किया है जैसे - अकेलेपन की विवशता की समस्या, वेश्या समस्या, परिवार विघटन की समस्या, आर्थाभाव की समस्या, पति-पत्नी के बीच शक की समस्या आदि। इन समस्याओं को कमलेश्वरजी ने कई बार अनेक नायिकाओं के संदर्भ में लिया है। सिर्फ अकेलेपन से ग्रस्त होनेवाली ही चार नायिकाएँ है - इरा, बंसिरी, चित्रा, चाँदनी। वेश्या, समस्या दो नायिकाओं के माध्यम से उठाई गयी है बंसिरी और चाँदनी। इस प्रकार कमलेश्वरजी नायिकाओं की समस्याओं के चित्रण मे सफल हो चूके है।

इसके पश्चात् कमलेश्वर की उपन्यासों की नायिकाओं का चरित्र-चित्रण किया गया है। चरित्र-चित्रण में नायिकाओं की चरित्रगत विशेषताओं को दिखाया गया है। चरित्र-चित्रण में नायिकाओं का चरित्र-चित्रण किया गया है। चरित्रगत विशेषताओं के अंतर्गत नायिकाओं की अलग-अलग विशेषताएँ पायी गयी हैं जैसे - एक ओर बंसिरी विवश, दृढ़निश्चयी, स्वाभिमानी पश्चातापदग्ध आदि विशेषताओं से युक्त है तो दूसरी ओर इरा एक भावूक, प्यार की प्यासी, आर्थिक दृष्टि से विवश अस्थिर जीवन जीनेवाली स्त्री के रूप में चित्रित हुई है। मालती सफल राजनीतिज्ञ, होशियार, भावुक, संवेदनशील, दृढ़, संयमी, गंभीर होने के बावजुद भी शोषक वर्ग का प्रतिनिधित्व करती दिखाई देती है। तो चित्रा अकेली, कुण्ठाग्रस्त, द्वंद्वयुक्त, दृढ़निश्चयी आदि गुणों से युक्त है। चाँदनी विवश, स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर, संघर्षशील, प्रबल, आशावादी है। समीरा अकेली, पाककला में माहिर सौंदर्यवती आदि विशेषताओं से युक्त है। तो बड़ी दादी अद्‌भुत है। अधिकतर मध्यवर्गीय परिवारों की नायिकाओं का चित्रण कमलेश्वरजी के उपन्यासों में हुआ है। इन नायिकाओं में से कुछ नायिकाएँ अपना एक अलग ही महत्त्व रखती है। जैसे उच्चवर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाली मालती एक सफल राजनीतिज्ञ है। लेकिन अपने परिवार को खो देती है सिर्फ वही अकेली ऐसी पात्र है जो उच्चवर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। नायिकाएँ कभी अपने आप का

विश्लेषण करती है तो कभी कमलेश्वर ने उनका विश्लेषण किया है। लेकिन कहीं भी आतविश्लेषणात्मक पूरा उपन्यास नायिकाओं की दृष्टि से नहीं लिखा गया है। कमलेश्वरजी नायिकाओं का चरित्रचित्रण करने में सफल दिखाई देते है।

इस प्रकार हम यह कह सकते है कि कमलेश्वरजी हिंदी साहित्य के एक प्रतिष्ठित साहित्यकार है उनके उपन्यासों में नायिकाएँ एक अलग ही प्रकार का व्यक्तित्व लेकर उभरी है। उनके उपन्यासों की नायिकाएँ कभी एक ही प्रकार की समस्या लेकर आती है तो कभी अपनी एक अलग ही प्रकार की समस्या लेकर आती है।

अनुसंधान की मौलिकता :-

1) कमलेश्वर के कृतित्वपर उनके व्यक्तित्व का प्रभाव किस तरह पड़ा है ?

कमलेश्वरजी के बचपन, शिक्षा, परिवार आदि के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है फिर भी उनके साहित्य में मैनपुरी का जिक्र बार-बार आया है तो उनके जीवन परिचय से यह पता चलता है कि मैनपुरी उनका जन्मस्थान है। उनके नौकरियों से यह बात साफ जाहिर हो जाती है कि उन्हें अपने जीवन में काफी संघर्ष करना पड़ा। जिस प्रकार उन्होंने निरंतर संघर्ष किया उसी प्रकार का संघर्ष उनके पात्र करते हैं।उनके प्रगतिशील विचारों का प्रभाव उनके साहित्यपर देखने को मिलता है।

2) कमलेश्वर के उपन्यासों के कथानक कैसे है ?

कमलेश्वर के उपन्यासों के कथानक बिल्कुल संक्षिप्त है अत: हम उन्हें लघु उपन्यास ही कह सकते हैं।

3) कमलेश्वर ने कौन-कौनसे विविध रूपों में नायिकाओं को प्रस्तुत किया है ?

कमलेश्वर ने नायिकाओं को सफल प्रेमिका, असफल प्रेमिका, अपारिवारिक नायिका, विधवा, कुण्ठित नायिका तथा आर्थिक स्थिति के आधारपर, नौकरी करनेवाली और न करनेवाली इन रूपों को प्रस्तुत किया है।

4) कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं की समस्याएँ कौन-सी है?

कमलेश्वर ने नायिकाओं के जीवन में आनेवाली - अकेलेपन की समस्या, वेश्या समस्या, परिवार विघटन

की समस्या, अर्थाभाव, पति-पत्नी के बीच शक आदि समस्याओं को चित्रित किया है।

5) कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं का चरित्र-चित्रण कैसे हुआ है ?

चरित्र चित्रण के अंतर्गत बंसिरी, इरा, मालती, चित्रा, चाँदनी, समीरा, बड़ी दादी आदि नायिकाओं की चरित्रगत विशेषताओं को सफलता से अंकित करने में लेखक सफल हुए हैं।

अध्ययन की नयी दिशा :-

``कमलेश्वर के उपन्यासों के नायक।``